

आदेशिका शुल्क

जितेन्द्र कुमार बनाम नानकराम
2025/198
निर्णय दिनांक-29.08.2025



न्यायालय

सहायक कलक्टर / उपखण्ड अधिकारी धोरीमन्ना-बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी -भागीरथराम आर.ए.एस.)

वाद संख्या:-78/2025

दर्ज तिथि:-25.06.2025

1. जितेन्द्र कुमार पुत्र नानकराम
जाति जाट निवासी चैनपुरा, तहसील धोरीमन्ना जिला बाड़मेर

.....वादी

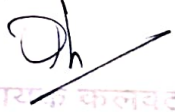
बनाम

1. नानकराम पुत्र सूराराम
2. अशोक गोदारा पुत्र नानकराम
3. किशनलाल पुत्र सूराराम
4. धनराम पुत्र सूराराम
5. विरेन्द्र कुमार पुत्र सूराराम
6. लालाराम पुत्र मानाराम
7. पूनमाराम पुत्र मानाराम
जाति जाट निवासी चैनपुरा, तहसील धोरीमन्ना जिला बाड़मेर
8. राजस्थान सरकार जरिये-तहसीलदार धोरीमन्ना जिला बाड़मेर
9. उपपंजियक धोरीमन्ना जिला बाड़मेर
10. भगवती पुत्री नानकराम
जाति जाट निवासी चैनपुरा, तहसील धोरीमन्ना जिला बाड़मेर

.....प्रतिवादीगण

उपस्थित अधिवक्ता
वादी:-श्री देवाराम चौधरी
प्रतिवादी:-श्री रिङमलराम चौधरी (3,4,6)

राजस्व वाद अन्तर्गत धारा-88,40,91, 188,92-क,209
राजस्थान काश्तकारी अधि0-1955
व हिन्दु उत्तराधिकार अधिनियम धारा 6

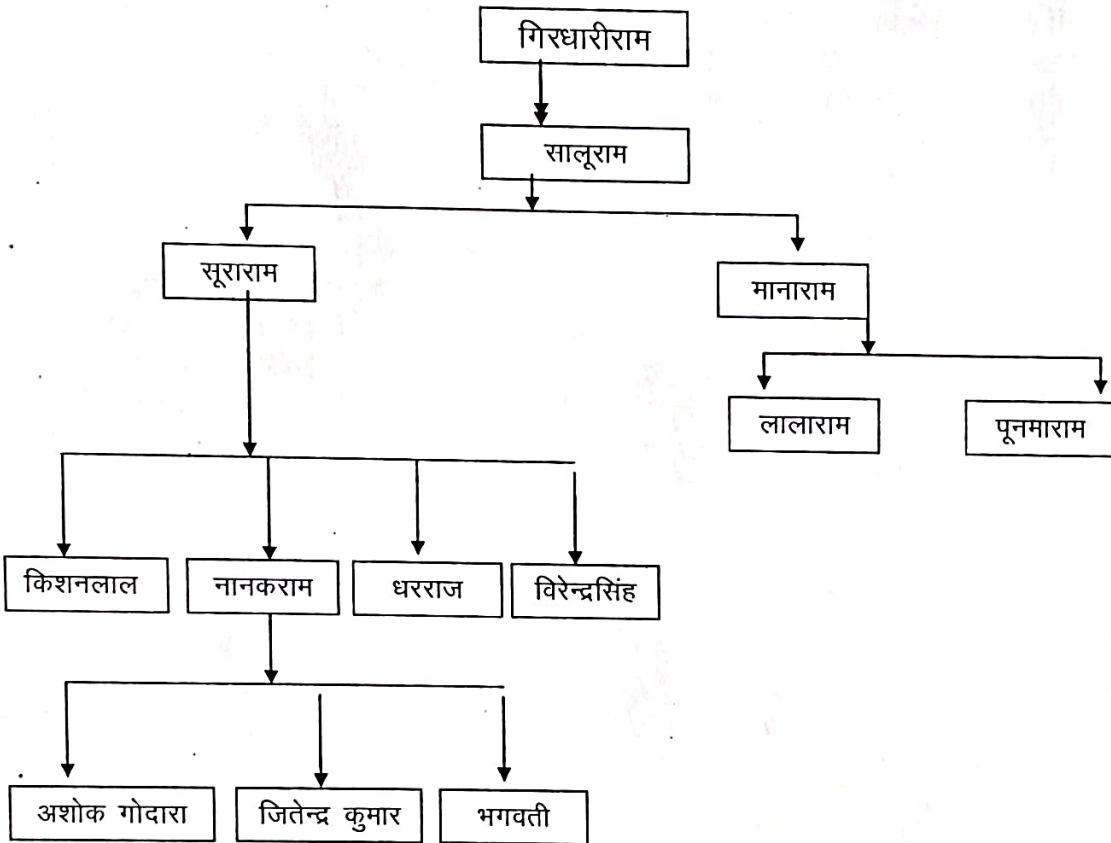

सहायक कलक्टर
SDO धोरीमन्ना



-:निर्णय:-

निर्णय तिथि:-29.08.2025

1. आज यह पत्रावली वाद पत्र बाबत इस्तकराहकक अन्तर्गत धारा-88,40,91, 188,92-क,209 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 एवं धारा 6 हिन्दु उत्तराधिकार अधिनियम वास्ते घोषणा व स्थाई निषेधाज्ञा का वास्ते निर्णय हेतु पेश हुई।
2. कि वादी की पैतृक व पुस्तैनी भूमि ग्राम चैनपुरा पटवार हल्का चैनपुरा तहसील धोरीमना के खेत खाता संख्या 70 के खसरा संख्या 255/0.0162 है० किस्म गै.मु. बेरा, 256/1.2302 है० किस्म बा.दोयम, 256/1/0.0162 है० किस्म बा.दोयम, 257/0.0728 है० किस्म गै.मु.ढाणी, 290/0.0324 है० किस्म गै.मु.बाड़ा, 291/12.0272 है० किस्म बा.दोयम, 291/2/0.8094 है० किस्म बा.दोयम कुल क्षेत्रफल 14.2044 है० कृषि भूमि के आये हुए है।
3. कि वादी एवं प्रतिवादीगण जाति से जाट होने तथा हिन्दु विधि से प्रशासित होती है। वादी व प्रतिवादीगण का खानदानी सजरा निम्न लिखित अनुसार है जो हिन्दु विधि से मिताक्षरा शाखा से प्रशासित होते हैं-






सहायक न्यायाधीश
SDO धोरीमना

4. कि वक्त सेटलमेंट व उससे पूर्व के समय वादग्रस्त आराजी गिरधारीराम के नाम दर्ज थी। गिरधारीराम का स्वर्गवास होने से वादी के परदादा सालूराम के नाम दर्ज थी। सालूराम के फौत होने से वादी के दादा सूराराम 1/2 व उनके भाई मानाराम 1/2 हिस्सा के नाम दर्ज हुई। सूराराम का स्वर्गवास होने से वादग्रस्त आराजी वादी के पिता प्रतिवादी संख्या 01 नानकराम व उनके भाईयों प्रतिवादी संख्या 03 किशनलाल, 04 धनराज, 05 विरेन्द्र कुमार के नाम दर्ज हुई। इस प्रकार वादग्रस्त आराजी में प्रतिवादी संख्या 01 का 1/8 हिस्सा दर्ज है। प्रतिवादी संख्या 01 नानकराम के 2 संतान वादी जितेन्द्र कुमार व प्रतिवादी संख्या 2 अशोक गोदारा है। इसलिए वादग्रस्त आराजी में वादी का 1/24 हिस्सा तथा प्रतिवादी संख्या 01 व 02 प्रत्येक का 1/24 -1/24 हिस्सा संयुक्त खातेदारी में बनता है। इसी अनुसार हिस्सा घोषित करवाने हेतु वादी द्वारा उक्त वाद दायर कर अपने हिस्से की घोषणा चाही गई है।
5. इस प्रकार उक्त खातेदारी आराजी पैतृक आराजी है। वादी हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम में मिलने वाले हिस्से का प्रथम श्रेणी के वारिश है तथा हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत वादी का वादग्रस्त भूमि में पैतृक हिस्सा है और वादी अपने पैतृक हिस्से अनुसार भूमि का बाहामी बंटवारा पर काबिज है। तथा हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम की धारा 6 के अनुसार हिन्दू पुरुष के पुत्र, पुत्री-पोत्र, पोत्री एवं परपोत्र का विधि अनुसार जन्म से ही सहदायिकी अर्थात पैतृक संपत्ति में जन्म से ही अधिकार प्राप्त हैं। तथा माननीय सुप्रीम कोर्ट के निर्णय अनुसार पिता के जीवनकाल में ही विधिक वारीश अपना हिस्सा घोषित करवाने के अधिकारी है। इसलिए वादी द्वारा उक्त वाद प्रस्तुत कर अपने हिस्से की घोषणा का निवेदन किया गया।
6. वाद पत्र दर्ज रजिस्टर किया जाकर प्रतिवादीगण को जरिये नोटिस तलब किया गया। प्रकरण में प्रतिवादीगण संख्या 3,4,6 मय वकुलाय तथा प्रतिवादी 01 स्वयं उपस्थित न्यायालय होकर अपना जवाबदावा प्रस्तुत किया। प्रतिवादी संख्या 01 ने अपने जवाबदावा में लिखित कथन किया कि प्रतिवादी 01 नानकराम के तीन संतान है। पुत्र जितेन्द्र कुमार, पुत्र अशोक गोदारा तथा पुत्री भगवती। इसलिए उक्त वादपत्र में प्रतिवादी के कुल तीन संतान व प्रतिवादी संख्या 01 स्वयं के आधार पर संयुक्त खातेदारी में घोषणा की जाती है तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। तत्पश्चात पत्रावली वादी साक्ष्य हेतु नियत करने पर वादी द्वारा साक्ष्य के रूप में निम्न शपथ पत्र, गवाह एवं दस्तावेज प्रदर्श करवाए।

दस्तावेज	संवत/विवरण	प्रदर्श
नामान्तकरण	ग्राम चैनपुरा के नामान्तकरण संख्या 255	प्रदर्श-1
जमाबंदी	ग्राम चैनपुरा के खाता संख्या 70	प्रदर्श-2
नक्शा मय जमाबंदी	ग्राम चैनपुरा के खसरा संख्या 255	प्रदर्श-3
नक्शा मय जमाबंदी	ग्राम चैनपुरा के खसरा संख्या 256	प्रदर्श-4
नक्शा मय जमाबंदी	ग्राम चैनपुरा के खसरा संख्या 256/1	प्रदर्श-5
नक्शा मय जमाबंदी	ग्राम चैनपुरा के खसरा संख्या 257	प्रदर्श-6


 साहायक बांणिक
 SDO धोरोनना

नक्शा मय जमाबंदी	ग्राम चैनपुरा के खसरा संख्या 290	प्रदर्श-7
नक्शा मय जमाबंदी	ग्राम चैनपुरा के खसरा संख्या 291	प्रदर्श-8
नक्शा मय जमाबंदी	ग्राम चैनपुरा के खसरा संख्या 291/2	प्रदर्श-9
आधार कार्ड	वादी का आधार कार्ड 951463767465	प्रदर्श-10 ए

1. प्रकरण में वादी द्वारा साक्ष्य स्वरूप निम्न गवाह प्रस्तुत किए-

नाम	जाति	निवासी
जितेन्द्र कुमार पुत्र नानकराम	जाट	चैनपुरा

7. प्रकरण में प्रतिवादीगण द्वारा उक्त वाद के संबंध में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं करना चाहते। प्रतिवादी संख्या 01 ने कथन किया कि उनका जवाब ही उनका अंतिम साक्ष्य है। उनकी संतान 3 है इसलिए 3 संतान होने के आधार पर हिस्से की घोषणा की जाती है तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं है का कथन कर आदेशिका पर हस्ताक्षर किये। अतः प्रतिवादीगण साक्ष्य बंद कर पत्रावली वास्ते बहस नियत की गई।

8. प्रकरण में वादी व प्रतिवादीगण के मध्य विवाद का कोई बिन्दु पत्रावली पर नहीं होने के कारण प्रकरण का प्रथम सुनवाई पर निर्णय किया जाना उचित प्रतीत होता है। इस संबंध में सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के आदेश-15 नियम-01 में प्रावधान बनाये गये हैं। जिसका उद्धरण इस प्रकार है:-

ORDER XV


Disposal of the Suit at the first hearing

1. Parties not at issue.—

(1) Where at the first hearing of a suit it appears that the parties are not at issue on any question of law or of fact, the Court may at once pronounce judgment.

9. पत्रावली पर विद्वान अधिवक्ता वादी की बहस सुनी गई। दौराने बहस विद्वान अधिवक्ता द्वारा वाद पत्र में अंकित बिन्दुओं को मात्र दौहराते हुए आराजी पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित होने के आधार पर वादी को खातेदार घोषित किये जाने का निवेदन किया। तथा प्रतिवादी संख्या 01 ने कथन किया कि प्रतिवादी की कुल 3 संतान है। प्रतिवादी स्वयं एवं 03 संतान के आधार पर उनकी संयुक्त खातेदारी आराजी में वादी एवं प्रतिवादी संख्या 01 से 2 व 10 का हिस्सा घोषित किया जाता है तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं है।

10. मैंने विद्वान अधिवक्ता वादी की बहस पर मनन किया गया एवं पत्रावली पर संलग्न दस्तावेजात् का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया गया। प्रकरण में वादी द्वारा दो निम्न अनुतोष निवेदित किये हैं:-


SDO धारोमना

1. वादग्रस्त भूमि में प्रतिवादी संख्या 01,02 व 10 के साथ वादी को सहखातेदार घोषित किया जावे।
 2. वादी के हक हिस्से में किसी प्रकार का परिवर्तन, हस्तक्षेप व बेचान, रहन नहीं करने/कराने तथा राजस्व रिकॉर्ड व मौके की यथास्थिति बनाए रखने हेतु स्थाई निषेधाज्ञा से पाबंद किया जावे।
11. पत्रावली पर अनुतोषवार विश्लेषण किया जाना आवश्यक है। सर्वप्रथम अनुतोष संख्या 01 जो कि निम्न प्रकार है:-
1. वादग्रस्त भूमि में प्रतिवादी संख्या 01 से 02 तथा 10 के साथ वादी को सहखातेदार घोषित किया जावे।

12. प्रकरण में वादी द्वारा राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-15 के अंतर्गत हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत अधिकार सृजित होने के आधार पर खातेदार के रूप में दर्ज होने का अनुतोष चाहा गया है। इस संबंध में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 का प्रकरण में अवलोकन किया जाना आवश्यक है जिसके प्रासंगिक विवरण का उद्धरण इस प्रकार है:-

6. Devolution of interest in coparcenary property.—

(1) On and from the commencement of the Hindu Succession (Amendment) Act, 2005 (39 of 2005), in a Joint Hindu family governed by the Mitakshara law, the daughter of a coparcener shall,—

(a) by birth become a coparcener in her own right the same manner as the son;

(b) have the same rights in the coparcenary property as she would have had if she had been a son;

(c) be subject to the same liabilities in respect of the said coparcenary property as that of a son, and any reference to a Hindu Mitakshara coparcener shall be deemed to include a reference to a daughter of a coparcener:

Provided that nothing contained in this sub-section shall affect or invalidate any disposition or alienation including any partition or testamentary disposition of property which had taken place before the 20th day of December, 2004.

13. उक्त उद्धरण अनुसार हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि किसी हिन्दू पुरुष की संपत्ति में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के अनुसार हिन्दू पुरुष के पुत्र,पुत्री-पोत्र,पोत्री एवं परपोत्र का विधि अनुसार जन्म से ही सहदायिकी अर्थात पैतृक संपत्ति में जन्म से ही अधिकार प्राप्त हैं। प्रकरण में तथ्य निर्विवादित है कि वादी व प्रतिवादीगण हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत हिन्दू होने के कारण प्रकरण में पैतृक

राजेश कुमार कलमंडर
SDO धोरीभना

सम्पत्ति पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के प्रावधान लागू होते हैं। साथ ही वादीगण द्वारा प्रस्तुत जमाबंदी के अवलोकन से स्पष्ट है कि मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 की स्वअर्जित आराजी नहीं होकर पैतृक आराजी है। साथ ही प्रकरण में यह तथ्य भी निर्विवादित है कि वादी व प्रतिवादी संख्या 01 से 02 तथा 10 सूराराम के वंशज है।

14. अतः हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 व 8 के तहत वादी एवं प्रतिवादी संख्या 01 से 02 व 10 सूराराम पुत्र सालूराम के वंशज होने तथा प्रकरण में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 लागू होने तथा मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 की स्वअर्जित आराजी नहीं होकर पैतृक आराजी होने के आधार पर वादी का अनुतोष मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के अनुसार हक हिस्से तक स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है।

15. प्रकरण में द्वितीय अनुतोष प्रतिवादीगण के विरुद्ध स्थाई निषेधाज्ञा जारी करने से संबंधित है। प्रकरण में वादी के अनुतोष के विवेचन हेतु तथ्यों का गहन विश्लेषण से पूर्व राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-188 का उद्धरण यहाँ प्रतीत होता है। जो कि निम्न प्रकार है:-

188. Injunction against wrongful ejectment—

(1) Any tenant whose right to or enjoyment of the whole or a part of his holding is invaded or threatened to be invaded by his landholder or any other person may bring a suit for the grant of a perpetual injunction.

(2) The court may after making the necessary enquiry grant a perpetual injunction in the following cases, namely-

(a) if there exist no standard for ascertaining the actual damage caused or likely to be caused by the invasion;

(b) if the invasion is such that pecuniary compensation does not afford adequate relief;

(c) where it is probable that pecuniary compensation cannot be got for the invasion.

(d) where the injunction is necessary to prevent a multiplicity of proceedings.

16. उक्त राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-188 के अवलोकन से स्पष्ट है कि धारा-188 के अन्तर्गत किसी खातेदारी आराजी पर खातेदारी अधिकारी की आमदरफत में किसी प्रकार का व्यवधान/अतिक्रमण किया जा रहा हो/किया जाने वाला हो उस स्थिति में व्यवधान उत्पन्न/अतिक्रमण करने वाले व्यक्ति को स्थाई निषेधाज्ञा से पाबंद किए जाने के प्रावधान बनाए गए हैं। राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-188 की उपधारा-2 में स्थाई निषेधाज्ञा जारी किए जाने हेतु निम्न चार परिस्थितियां बताई गई हैं:-

परिस्थिति	विवरण
1.	जब हो रहे/होने वाले संभावित अतिक्रमण/व्यवधान/घुसपैठ से होने वाले नुकसान के आंकलन हेतु कोई मानक/मापदण्ड अस्तित्व में नहीं हो।
2.	जब अतिक्रमण/व्यवधान/घुसपैठ इस प्रकार का हो कि नुकसान की आर्थिक भरपाई/क्षतिपूर्ति पर्याप्त राहत/संतुष्टि प्रदान नहीं करता हो।
3.	जब इस तथ्य की संभावना हो कि अतिक्रमण/व्यवधान/घुसपैठ से होने




स. जितेन्द्र कुमार
SDO धारोचना

	वाले नुकसान की आर्थिक भरपाई/क्षतिपूर्ति की प्रदानगी संभव नहीं होगी।
4.	जब निषेधाज्ञा राजस्व विवादों की बहुलता को रोकने हेतु आवश्यक हो।

17. उक्त विधिक प्रावधानों के परिप्रेक्ष्य में प्रकरण का विश्लेषण किया जाना आवश्यक है। वादी का यह कथन है कि उक्त आराजी पर प्रतिवादीगण द्वारा जबरन कब्जा कर उसके उपयोग व उपभोग में व्यवधान किया जाता है या उस पर निर्माण किया जाता है तो वादी को स्पष्ट रूप से नापूर्ति होने वाली क्षति संभावित है।

18. राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-188 की उपधारा-1 के तहत स्थाई निषेधाज्ञा का अनुतोष सिद्ध करने हेतु निम्न महत्वपूर्ण बिन्दु हैं जो इस प्रकार हैं:-

स्वामित्व एवं कब्जा	प्रकरण में पत्रावली के अवलोकन के अनुसार स्पष्ट है कि वादी के पिता प्रतिवादी संख्या 01 नानकराम की पैतृक खातेदारी आराजी ग्राम चैनपुरा पटवार हल्का चैनपुरा तहसील धोरीमना के खेत खाता संख्या 70 के खसरा संख्या 255/0.0162 है0 किस्म गै.मु.बेरा, 256/1.2302 है0 किस्म बा.दोयम, 256/1/0.0162 है0 किस्म बा.दोयम, 257/0.0728 है0 किस्म गै.मु.ढाणी, 290/0.0324 है0 किस्म गै.मु.बाड़ा, 291/12.0272 है0 किस्म बा.दोयम, 291/2/0.8094 है0 किस्म बा.दोयम कुल क्षेत्रफल 14.2044 है0 में अवस्थित है। प्रकरण में वादी का प्रथम अनुतोष स्वीकार होने के पश्चात् मुतनाजा आराजी पर वादी का कब्जा काश्त व वहमी बंटवारा से संयुक्त काश्तकार घोषित होने के आधार पर वादी की संयुक्त खातेदारी होना पूर्ण रूप से साबित होती है। अतः मुतनाजा आराजी पर मुताबिक हिस्सा वादी का संयुक्त स्वामित्व अविवादित है। परंतु राजस्व रिकॉर्ड में संयुक्त खातेदारी होने से वादी के किसी निश्चित भू-भाग पर बिना विधिक विभाजन करवाये कब्जे के बारे में कथन किया जाना कानूनन अनुचित है।
सुविधा का संतुलन	मुतनाजा आराजी पर वादी के पिता की संयुक्त खातेदारी आराजी होने तथा वादी कब्जा काश्त व वहमी बंटवारा के कारण सुविधा व न्याय का संतुलन वादीगण के पक्ष में होना प्रतीत होता है।
अपूरणीय क्षति	प्रकरण में पत्रावली के अवलोकन के अनुसार स्पष्ट है कि वादी के पिता प्रतिवादी संख्या 01 नानकराम की पैतृक खातेदारी आराजी ग्राम चैनपुरा पटवार हल्का चैनपुरा तहसील धोरीमना के खेत खाता संख्या 70 के खसरा संख्या 255/0.0162 है0 किस्म गै.मु.बेरा, 256/1.2302 है0 किस्म बा.दोयम, 256/1/0.0162 है0 किस्म बा.दोयम, 257/0.0728 है0 किस्म गै.मु.ढाणी, 290/0.0324 है0 किस्म गै.मु.बाड़ा, 291/12.0272 है0 किस्म बा.दोयम, 291/2/0.8094 है0 किस्म बा.दोयम कुल क्षेत्रफल 14.2044 है0 में अवस्थित है। प्रकरण में वादी का प्रथम अनुतोष स्वीकार होने के पश्चात् मुतनाजा आराजी पर वादी का संयुक्त काश्तकार घोषित होने के आधार पर वादी की संयुक्त खातेदारी होना पूर्ण रूप से साबित होती है। प्रार्थी को अपूरणीय क्षति साबित करने से पूर्व संयुक्त आराजी का विधिक विभाजन करवाया जाना अपरिहार्य शर्त है।


 साहायक कमिश्नर
 SDO धोरीमना

19. इस प्रकार पत्रावली के अवलोकन के अनुसार स्पष्ट है कि वादी के पिता नानकराम की पैतृक खातेदारी आराजी ग्राम चैनपुरा पटवार हल्का चैनपुरा तहसील धोरीमना के खेत खाता संख्या 70 के खसरा संख्या 255/0.0162 है0 किस्म गै.मु.बेरा, 256/1.2302 है0 किस्म बा.दोयम, 256/1/0.0162 है0 किस्म बा.दोयम, 257/0.0728 है0 किस्म गै.मु.ढाणी, 290/0.0324 है0 किस्म गै.मु.बाड़ा, 291/12.0272 है0 किस्म बा.दोयम, 291/2/0.8094 है0 किस्म बा.दोयम कुल क्षेत्रफल 14.2044 है0 में अवस्थित है। प्रकरण में वादी का प्रथम अनुतोष स्वीकार होने के पश्चात् मुतनाजा आराजी पर वादी का संयुक्त काश्तकार घोषित होने के आधार पर वादी की संयुक्त खातेदारी होना पूर्ण रूप से साबित होती है। अतः मुतनाजा आराजी पर मुताबिक हिस्सा वादी का संयुक्त स्वामित्व अविवादित है। परंतु राजस्व रिकॉर्ड में संयुक्त खातेदारी होने से वादी के किसी निश्चित भू-भाग पर बिना विधिक विभाजन करवाये कब्जे के बारे में कथन किया जाना कानूनन अनुचित है। लेकिन कब्जा काश्त व वहमी बंटवारा के आधार पर सुविधा व न्याय का संतुलन वादी के पक्ष में होना स्पष्ट है। परन्तु रेकॉर्ड में सहखातेदार होने से अपने हिस्से तक व अपने हिस्से तक की स्थाई निषेधाज्ञा प्राप्त करने के अधिकारी है। अतः

आदेश है कि

वादी का दावा बाबत इस्तकरार हक स्वीकार किया जाकर डिक्री किया जाता है। वादी को मुतनाजा आराजी हाल ग्राम चैनपुरा पटवार हल्का चैनपुरा तहसील धोरीमना के खेत खाता संख्या 70 के खसरा संख्या 255/0.0162 है0 किस्म गै.मु.बेरा, 256/1.2302 है0 किस्म बा.दोयम, 256/1/0.0162 है0 किस्म बा.दोयम, 257/0.0728 है0 किस्म गै.मु.ढाणी, 290/0.0324 है0 किस्म गै.मु.बाड़ा, 291/12.0272 है0 किस्म बा.दोयम, 291/2/0.8094 है0 किस्म बा.दोयम कुल क्षेत्रफल 14.2044 है0 में वादी के पिता नानकराम के हिस्से 1/8 में से वादी का 1/32 हिस्सा तथा प्रतिवादी संख्या 01 व 02 तथा 10 प्रत्येक का 1/32 हिस्सा का संयुक्त खातेदार मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के अनुसार हक हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। वादी व प्रतिवादी संख्या 01,02 तथा 10 को उक्त आराजी में कानूनन हक हिस्से तक संयुक्त खातेदार दर्ज होने बाबत राजस्व इंद्राज दुरुस्त करवाने का अधिकारी घोषित किया जाता है। तथा वादी के हिस्से तक स्थाई निषेधाज्ञा जारी की जाती है कि प्रतिवादीगण वादी के हक हिस्से में किसी प्रकार की दखलंदाजी नहीं करें।

निर्णय की पृथक से पर्चा डिक्री तैयार की जाये।

आज 29.08.2025 यह निर्णय मेरे द्वारा खुले न्यायालय में सुनाया जाकर हस्ताक्षर एवं मोहर युक्त जारी किया गया।

(भागीरथराम आर.ए.एस.)
सहायक कलक्टर
धोरीमन्ना-बाड़मेर



डिक्री व मुकदमें इब्तदाई
(आर्डर 20, रूल्स 6,7, सीपीसी)
न्यायालय

सहायक कलक्टर / उपखण्ड अधिकारी

धोरोमन्ना-बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी - भागीरथराम आर.ए.एस.)

वाद संख्या:-78 / 2025

दर्ज तिथि:-25.06.2025

1. जितेन्द्र कुमार पुत्र नानकराम
जाति जाट निवासी चैनपुरा, तहसील धोरीमन्ना जिला बाड़मेर

.....वादी

बनाम

1. नानकराम पुत्र सूराराम
2. अशोक गोदारा पुत्र नानकराम
3. किशनलाल पुत्र सूराराम
4. धनराम पुत्र सूराराम
5. विरेन्द्र कुमार पुत्र सूराराम
6. लालाराम पुत्र मानाराम
7. पूनमाराम पुत्र मानाराम
जाति जाट निवासी चैनपुरा, तहसील धोरीमन्ना जिला बाड़मेर
8. राजस्थान सरकार जरिये-तहसीलदार धोरीमन्ना जिला बाड़मेर
9. उपपंजियक धोरीमन्ना जिला बाड़मेर
10. भगवती पुत्री नानकराम
जाति जाट निवासी चैनपुरा, तहसील धोरीमन्ना जिला बाड़मेर

.....प्रतिवादीगण

उपस्थित अधिवक्ता

वादी:-श्री देवाराम चौधरी

प्रतिवादी:-श्री रिड़मलराम चौधरी (3,4,6)

राजस्व वाद अन्तर्गत धारा-88,40,91, 188,92-क,209
राजस्थान काश्तकारी अधि0-1955

-:पर्चा डिक्री:-

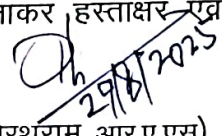
वादी का दावा बाबत इस्तकरार हक्क स्वीकार किया जाकर डिक्री किया जाता है। वादी को मुतनाजा आराजी हाल ग्राम ग्राम चैनपुरा पटवार हल्का चैनपुरा तहसील धोरीमन्ना के खेत खाता संख्या 70 के खसरा संख्या 255/0.0162 है0 किस्म गै.मु.बेरा, 256/1.2302 है0 किस्म

सहायक कलक्टर
SDO धोरोमन्ना

बा.दोयम, 256/1/0.0162 है0 किरम बा.दोयम, 257/0.0728 है0 किरम
गै.मु.ढाणी, 290/0.0324 है0 किरम गै.मु.बाड़ा, 291/12.0272 है0 किरम
बा.दोयम, 291/2/0.8094 है0 किरम बा.दोयम कुल क्षेत्रफल 14.2044 है0
में वादी के पिता नानकराम के हिस्से 1/8 में से वादी का 1/32 हिस्सा
तथा प्रतिवादीगण संख्या 01 व 02 तथा 10 प्रत्येक का 1/32 हिस्सा का
संयुक्त खातेदार मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के अनुसार
हक हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। वादी व प्रतिवादीगण
संख्या 01,02 तथा 10 को उक्त आराजी में कानूनन हक हिस्से तक
संयुक्त खातेदार दर्ज होने बाबत् राजस्व इन्द्राज दुरुस्त करवाने का
अधिकारी घोषित किया जाता है। तथा वादी के हिस्से तक स्थाई
निषेधाज्ञा जारी की जाती है कि प्रतिवादीगण वादी के हक हिस्से में किसी
प्रकार की दखलंदाजी नहीं करें।

यह पर्चा-डिक्री पालनार्थ हेतु तहसीलदार धोरीमन्ना को भिजवाई जावें। आदेश जारी हो।
पक्षकारान अपना-अपना खर्चा स्वयं वहन करेंगे।

यह पर्चा-डिक्री आज दिनांक 29.08.2025 को मेरे द्वारा लिखवाई जाकर हस्ताक्षर एवं मुहर
युक्त जारी की जाकर खुले न्यायालय में सुनाई गई।


(भागीरथराम आर.ए.एस)
सहायक कलक्टर
धोरीमन्ना-बाड़मेर